अभ्यास प्रश्न-पत्र

समय : 3 घंटे] [पूर्णांक : 90

खंड-क

1. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प का चयन कीजिए–**

हम जानते हैं कि आदमी जानवर की तरह स्वतंत्र नहीं है, इसी से वह आदमी है। जहाँ वह रहता है, उसे जंगल नहीं कहते नगर कहते हैं, समाज कहते हैं। यानी आदमी वह है, जिसके लिए स्व ही सब कुछ नहीं है। जिसे 'पर' का भी ध्यान है।

'स्व' को लेकर तो हम जन्मे ही हैं। उस स्वत्व के आधार पर हम संपत्ति की रचना करते हैं, यानी स्वत्व का विस्तार करते हैं। 'स्व' का विस्तार 'पर' को अपनाने के द्वारा होता है, ऐसे विवाह होता है और परिवार बनता है, संपत्ति की नींव पड़ती है। 'यह मेरा' यानी मैं इसके लिए ज़िम्मेदार हूँ। मेरी स्त्री, मेरा बच्चा, मेरा पति, मेरा पिता, ये सब नाते-रिश्ते यह जतलाने के लिए पैदा हुए कि हम एक-दूसरे के लिए ज़िम्मेदार हैं, एक-दूसरे के दायित्व में आपस में बँधे हैं। आदमी मेहनत करके जितना जो लाता है, परिवार में बाँटकर खाता और भोगता है। यह हुई उसकी कमाई और उसमें से जो बचा, वह हुई उसकी संपत्ति। परिवार हमारे समाज की इकाई है। इस इकाई का 'स्व' धर्म है कि वह संपत्ति बनाए और रखे।

अब मानव-समाज फैल गया है, जटिलताएँ बढ़ गई हैं। लाखों-लाख आदमी मंज़िलों में एक-दूसरे के सिर पर रहने को विवश हो गए हैं। अब धन कागज़ी हो गया है। जिसके पास 'कागज़' की प्रचुर मात्रा में है, वह कुछ भी करता नहीं दिखता। श्रम जिसके पास है, उसके पास कागज़ का अभाव है। इससे समाज में विषमता पैदा हो रही है, अलगाव बढ़ रहा है। इसका निदान यही है कि संपत्ति जितनी है, सारे समाज की रहे और सबको आवश्यकतानुसार मिले। इससे आपा-धापी नहीं रहेगी और समाज खुशहाल होगा। शोषण नहीं होगा, दैन्य नहीं होगा, और दुख भी नहीं होगा।

(क) 'स्व' और 'पर' का क्या अर्थ है?

(*i*) स्वार्थ, निःस्वार्थ (*ii*) यह मेरा है, वह पराया है। (*iii*) स्वाधीनता, पराधीनता (*iv*) मृत, परंतु

(ख) संपत्ति की रचना में स्वत्व का क्या स्थान है?

(*i*) बचत ही संपत्ति है (*ii*) आय ही संपत्ति है (*iii*) धरोहर ही संपत्ति है (*iv*) व्यय ही संपत्ति है

(ग) परिवार की रचना का मूल आधार क्या है?

(*i*) पत्नी (*ii*) ज़िम्मेदारी (*iii*) बच्चे (*iv*) संपत्ति

(घ) लेखक ने 'कागज़' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया है?

(*i*) दस्तावेज़ (*ii*) अभिलेख (*iii*) करेंसी/रुपया (*iv*) पत्र

(ङ) गद्यांश का उचित शीर्षक चुनिए–

(*i*) मनुष्य और जानवर (*ii*) मनुष्य और समाज (*iii*) मनुष्य और सत्ता (*iv*) मनुष्य और धन

2. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प का चयन कीजिए–**

महँगाई या मूल्य वृद्धि से आज समस्त विश्व त्रस्त है। भारत बढ़ती महँगाई की चपेट में बुरी तरह से जकड़ा हुआ है। जीवनोपयोगी वस्तुओं के दाम दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं, जिनसे जनसाधारण को अत्यंत कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। महँगाई से देश के आर्थिक ढाँचे पर अत्यधिक दबाव पड़ रहा है। महँगाई के निर्मम चरण अनवरत रूप से अग्रसर हैं; पता नहीं वे कब व कहाँ रुकेंगे? आज कोई भी वस्तु बाज़ार में सस्ते दामों पर उपलब्ध नहीं है। समाज का प्रत्येक वर्ग महँगाई की मार को अनाहूत अतिथि की तरह सहन कर रहा है। इसका सर्वग्राही प्रभाव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पर पड़ रहा है। सरकारी योजनाओं पर अत्यधिक

खर्च हो रहा है। अपने स्वार्थ के लिए लोगों में धार्मिक, सामाजिक तथा नैतिक मान्यताएँ पीछे छूट जाती हैं और भ्रष्टाचार का बोलबाला हो जाता है। अर्थशास्त्र की मान्यता है कि यदि किसी वस्तु की माँग उत्पादन से अधिक हो, तो मूल्यों में स्वाभाविक रूप से वृद्धि हो जाती है।

(क) आज महँगाई से कौन दुखी है?

(*i*) उद्योगपति (*ii*) सारा संसार (*iii*) सेठ (*iv*) अमीर

(ख) महँगाई से देश का कौन-सा ढाँचा डगमगा रहा है?

(*i*) आर्थिक (*ii*) सामाजिक (*iii*) राजनैतिक (*iv*) नैतिक

(ग) अर्थशास्त्र के अनुसार महँगाई का क्या कारण है?

(*i*) माँग से अधिक उत्पादन (*ii*) धार्मिक मान्यताएँ (*iii*) उत्पादन से अधिक माँग (*iv*) राजनैतिक दबाव

(घ) 'अनाहूत' का विलोम शब्द क्या है?

(*i*) हत (*ii*) ओहूत (*iii*) आहूत (*iv*) नाहुत

(ङ) इस गद्यांश का उचित शीर्षक है–

(*i*) भ्रष्टाचार (*ii*) अर्थशास्त्र (*iii*) जमाखोरी (*iv*) महँगाई

3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प का चयन कीजिए–

मन-दीपक निष्कंप जलो रे! सागर की उत्ताल तरंगें,
आसमान को छू-छू जाएँ डोल उठे डगमग भूमंडल
अग्निमुखी ज्वाला बरसाए धूमकेतु बिजली की द्युति
धरती का अंतर हिल जाए।

फिर भी तुम ज़हरीले फन को कालजयी बन उसे दलो रे!
कदम-कदम पर पत्थर, काँटे, पैरों को छलनी कर जाएँ।
श्रांत-क्लांत करने को आतुर क्षण-क्षण में जग की बाधाएँ
मरण-गीत आकर गा जाएँ, दिवस रात आपद विपदाएँ।

फिर भी तुम हिमपात-तपन में बिना आह चुपचाप चलो रे!
कालकूट जितना हो पी लो, दर्द दंश दाहों को जी लो
जीवन की जर्जर चादर को अटल नेह साहस से सी लो
आज रात है तो कल निश्चय अरुण हँसेगा, खुशियाँ ले लो।
आकुल पाषाणी अंतर से

निर्झर-सा अविराम ढलो रे! जन-हिताय दिन-रात गलो रे!

(क) कवि ने किन बाधाओं को ज़हरीले फन के रूप में कल्पित किया है?

(*i*) आतंकवाद को (*ii*) शत्रुओं को
(*iii*) ज्वालामुखी को (*iv*) प्राकृतिक विपदाओं को

(ख) 'हिमताप-तपन' से कवि का अभिप्राय है?

(*i*) पत्थर काँटे (*ii*) जग की बाधाएँ (*iii*) विषम जलवायु (*iv*) मृत्यु का डर

(ग) जीवन में अटल नेह और साहस की क्या आवश्यकता है?

(*i*) पीड़ा और दुख मिटाने के लिए (*ii*) कालकूट पीने के लिए
(*iii*) वैर-वैमनस्य दूर करने के लिए (*iv*) भ्रष्टाचार समाप्त करने के लिए

(घ) 'मनदीपक' और 'निर्झर-सा' में निहित अलंकार बताइए।

(*i*) उत्प्रेक्षा और रूपक (*ii*) रूपक और उपमा (*iii*) अनुप्रास और उपमा (*iv*) अनुप्रास और रूपक

(ङ) 'पत्थर' और 'काँटे' किसके प्रतीक हैं?

(i) पहाड़ और पेड़ (ii) कष्ट और दुःख (iii) पाप और पुण्य (iv) जीवन की हार

4. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प का चयन कीजिए–

माटी तुझे प्रणाम!
मेरे पुण्य देश की माटी, तू कितनी अभिराम!
तुझे लगा माथे से सारे कष्ट हो गए दूर
क्षणभर में ही भूल गया मैं शत्रु-यंत्रणा क्रूर,
सुख-स्फूर्ति का इस काया में हुआ पुनः संचार
लगता जैसे आज युगों के बाद मिला विश्राम!
माटी तुझे प्रणाम!
तुझसे बिछुड़ मिला प्राणों को कभी न पलभर चैन,
तेरे दर्शन हेतु रात-दिन तरस रहे थे नैन,
धन्य हुआ तेरे चरणों में आकर यह अस्तित्व–
हुई साधना सफ़ल, भक्त को प्राप्त हो गए राम।
माटी तुझे प्रणाम!
अमर मृत्तिके! लगती तू पारस से बढ़कर आज,
कारा-जड़ जीवन सचेत फिर, तुझ को छू कर आज,
मरणशील हम, किंतु अमर तू है अमर्त्य यह धाम–
हम मर-मरकर अमर करेंगे तेरा उज्ज्वल नाम!
माटी तुझे प्रणाम!

(क) कवि किसे प्रणाम कर रहा है?

(i) देश की माटी को (ii) देश की वनस्पति को (iii) देश के जंगल को (iv) देश के पहाड़ को

(ख) मातृभूमि को प्रणाम करने के बाद कैसी अनुभूति होती है?

(i) प्रसन्नता की (ii) असीम सुख की (iii) अति उदासी की (iv) असीम दुख की

(ग) माटी से बिछुड़ने पर कवि को कैसा अनुभव हुआ?

(i) वनवासी जैसा (ii) जेल जैसा अनुभव (iii) बेचैनी का अनुभव (iv) असफ़लता

(घ) 'अमर्त्य' शब्द का अर्थ है–

(i) जिसे मौत न आए (ii) सदा मौत का डर होना (iii) जिसका मरना निश्चित हो (iv) नश्वर होना

(ङ) उपर्युक्त काव्यांश का उचित शीर्षक चुनिए–

(i) मेरे देश के सपूत (ii) मेरे खेत की माटी (iii) देश के अमर सेनानी (iv) मेरे देश की माटी

खंड-ख

5. निर्देशानुसार वाक्य रूपांतरण कीजिए–

(क) काशी का नायाब हीरा हमेशा से दो कौमों को एक होकर आपस में भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देता रहा। (मिश्रित वाक्य में)

(ख) जिस व्यक्ति की बुद्धि ने अथवा उसके विवेक ने किसी भी नए तथ्य का दर्शन किया, वह व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत व्यक्ति है। (सरल वाक्य में)

(ग) उनकी खुशहाली के दिनों में उनकी दरियादिली के चर्चे भी कम नहीं थे। (संयुक्त वाक्य में)

6. निर्देशानुसार वाच्य-परिवर्तन कीजिए–

(क) अंग्रेज़ी का यह उपन्यास मुझसे नहीं पढ़ा जाता। (कर्तृवाच्य में)

(ख) सम्राट हर्ष ने गरीबों में वस्त्र बाँटे। (कर्मवाच्य में)

(ग) पक्षी आकाश में उड़ते हैं। (भाववाच्य में)

(घ) मुझसे इतने कम प्रकाश में नहीं पढ़ा जाता। (कर्तृवाच्य में)

7. निम्नलिखित वाक्य में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए–

शहनाई के इसी मंगल ध्वनि के नायक बिस्मिल्ला खाँ साहब अस्सी बरस से सुर माँग रहे हैं।

8. (क) **निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों में प्रयुक्त रस का नाम बताइए–**

(i) मेरे प्यारे नव जलद से कंज से नेत्रवाले,
जाके आये न मधुबन से औ न भेजा संदेशा।
मैं रो-रो के प्रिय-विरह से बावली हो रही हूँ।
जा के मेरी सब दुख-कथा श्याम को तू सुना दे।

(ii) गीध जाँघि को खोदि-खोदि कै मांस उपारत।
स्वान आंगुरिन काटि-काटि कै खात विदारत॥

(ख) **निम्नलिखित काव्यांश में कौन-सा स्थायी भाव है?**

उस काल मारे क्रोध के तनु काँपने उनका लगा।
मानो हवा के ज़ोर से सोता हुआ सागर जगा॥

(ग) **वात्सल्य रस का एक उदाहरण लिखिए।**

खंड-ग

9. **निम्नलिखित में से किसी एक गद्यांश के प्रश्नों के उत्तर लिखिए–**

पिता जी के जिस शक्की स्वभाव पर मैं कभी भन्ना-भन्ना जाती थी, आज एकाएक अपने खंडित विश्वासों की व्यथा के नीचे मुझे उनके शक्की स्वभाव की झलक ही दिखाई देती है... बहुत 'अपनों' के हाथों विश्वासघात की गहरी व्यथा से उपजा शक। होश सँभालने के बाद से ही जिन पिता जी से किसी-न-किसी बात पर हमेशा मेरी टक्कर ही चलती रही, वे तो न जाने कितने रूपों में मुझमें हैं... कहीं कुंठाओं के रूप में, कहीं प्रतिक्रिया के रूप में तो कहीं प्रतिच्छाया के रूप में। केवल बाहरी भिन्नता के आधार पर अपनी परंपरा और पीढ़ियों को नकारने वालों को क्या सचमुच इस बात का बिलकुल अहसास नहीं होता कि उनका आसन्न अतीत किस कदर उनके भीतर जड़ जमाए बैठा रहता है।

(क) **लेखिका ने अपने पिता को किन-किन रूपों में अपने भीतर पाया है?**

(ख) **लेखिका के अपने पिता के साथ संबंध कैसे थे?**

(ग) **पिता के शक्की स्वभाव का लेखिका पर क्या प्रभाव पड़ा?**

अथवा

जिस योग्यता, प्रवृत्ति अथवा प्रेरणा के बल पर आग का व सुई-धागे का आविष्कार हुआ, वह है व्यक्ति विशेष की संस्कृति; और उस संस्कृति द्वारा जो आविष्कार हुआ, जो चीज़ उसने अपने तथा दूसरों के लिए आविष्कृत की, उसका नाम है सभ्यता। जिस व्यक्ति में पहली चीज़, जितनी अधिक व जैसी परिष्कृत मात्रा में होगी, वह व्यक्ति उतना ही अधिक व वैसा ही परिष्कृत आविष्कर्ता होगा।

(क) **संस्कृति किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।**

(ख) **सभ्यता का क्या अर्थ है?**

(ग) **कोई व्यक्ति परिष्कृत आविष्कर्ता कब कहलाएगा?**

10. **निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए–**

(क) 'नौबतखाने में इबादत' पाठ के आधार पर बताइए कि काशी में हो रहे कौन-से परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे?

(ख) मानव की जो योग्यता उससे आत्म-विनाश के साधनों का आविष्कार कराती है, हम उसे उसकी संस्कृति कहें या असंस्कृति? 'संस्कृति' पाठ के आधार पर लिखिए।

(ग) कुछ पुरातनपंथी लोग स्त्रियों की शिक्षा के विरोधी थे। द्विवेदी जी ने क्या-क्या तर्क देकर स्त्री-शिक्षा का समर्थन किया?

(घ) डॉ० अंबालाल कौन थे? उन्होंने लेखिका की प्रशंसा क्यों की? 'एक कहानी यह भी' पाठ के आधार पर बताइए।

(ङ) 'सुषिर वाद्यों' से क्या अभिप्राय है? शहनाई को 'सुषिर वाद्यों में शाह की उपाधि क्यों दी गई होगी? 'नौबतखाने में इबादत' पाठ के आधार पर बताइए।

11. **निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश के प्रश्नों के उत्तर लिखिए–**

दुविधा-हत साहस है, दिखता है पंथ नहीं,
देह सुखी हो पर मन के दुख का अंत नहीं।
दुख है न चाँद खिला शरद-रात आने पर,
क्या हुआ जो खिला फूल रस-बसंत जाने पर?
जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण,
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

(क) कवि का साहस दुविधा-हत क्यों है? 'छाया मत छूना' पाठ के आधार पर बताइए।

(ख) आशय स्पष्ट कीजिए–

'दुख है न चाँद खिला शरद-रात आने पर।'

(ग) कवि क्या भूलने की सीख देता है और क्यों?

अथवा

माँ ने कहा पानी में झाँककर
अपने चेहरे पर मत रीझना
आग रोटियाँ सेंकने के लिए है
जलने के लिए नहीं
वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन हैं स्त्री जीवन के
माँ ने कहा लड़की होना
पर लड़की जैसी दिखाई मत देना

(क) 'अपने चेहरे पर मत रीझना' माँ ने बेटी से ऐसा क्यों कहा?

(ख) 'शाब्दिक भ्रमों' से कवि का क्या आशय है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

(ग) माँ ने 'स्त्री जीवन के बंधन' किन्हें कहा है और क्यों?

12. **निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए–**

(क) 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' पाठ के आधार पर परशुराम की दो चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।

(ख) कवि 'संगतकार' कविता द्वारा हममें किस प्रकार की संवेदनशीलता जगाना चाहता है?

(ग) श्री राम ने लक्ष्मण को आँखों के संकेत से क्या समझाया? 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' पाठ के आधार पर बताइए।

(घ) 'छाया मत छूना' कविता का संदेश स्पष्ट कीजिए।

(ङ) आपके विचार से 'कन्यादान' कविता में माँ ने ऐसा क्यों कहा कि लड़की होना पर लड़की जैसा दिखाई मत देना?

***13. "मैं क्यों लिखता हूँ?" पाठ में वर्णित हिरोशिमा की घटना विज्ञान का भयानकतम दुरुपयोग है। एक संवेदनशील युवा नागरिक की हैसियत से विज्ञान का दुरुपयोग रोकने में आपकी क्या भूमिका है?**

खंड-घ

14. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए–

(क) परिश्रम सफलता का मूल है–

संकेत बिंदु– • मानसिक और शारीरिक श्रम के बिना सिद्धि असंभव • दैनिक कार्यों में परिश्रम का महत्त्व • उत्साह, साहस और सामर्थ्य परिश्रम के बिना निरर्थक • उपसंहार।

(ख) दिल्ली की बसों में यात्रा–

संकेत बिंदु– • सस्ता और सर्वसुलभ • निश्चित और नियमित समय पर • बस यात्रा तपस्या से कम नहीं • उपसंहार।

(ग) किसी प्रदर्शनी का आँखों देखा वर्णन–

संकेत बिंदु– • प्रगति मैदान में मेला • भारतीय भाषाओं के स्टाल • भारतीय संस्कृति और सभ्यता का नमूना • उपसंहार।

15. नीचे दिए गए समाचार को पढ़िए। इसे पढ़कर जो भी विचार आपके मन में आते हैं, उन्हें किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र के रूप में लिखिए–

मिताली राज ने वन डे में पूरे किए 5000 रन

कप्तान मिताली राज सोमवार को महिला वन डे क्रिकेट में 5 हज़ार रन बनाने वाली दूसरी क्रिकेटर बन गईं। उनके 157 मैच में 5029 रन हैं। इंग्लैंड की चार्लोट एडवर्ड्स (5812) पहले नंबर पर हैं।

16. निम्नलिखित गद्यांश का सार लगभग एक-तिहाई शब्दों में लिखते हुए उचित शीर्षक भी लिखिए–

महापुरुषों के जीवन पर एक दृष्टि डाली जाए, तो पता चलता है कि उन्होंने अपने जीवन में आई कठिनाइयों से कभी मुँह नहीं मोड़ा, बल्कि उनका साहसपूर्वक सामना किया और विजय का वरण किया। उन्होंने सिद्ध किया कि जीवन की सार्थकता संघर्ष में है। अनेक विद्वानों का कहना है कि जीवन एक संघर्ष है, संघर्षहीन जीवन मृत्यु के समान होता है। प्रत्येक मनुष्य की नैसर्गिक इच्छा होती है कि वह जीवन में उच्च सफलता हासिल कर दूसरों के सामने उदाहरण प्रस्तुत करे। ये सफलताएँ मात्र कामना करने से ही नहीं प्राप्त हो जाती हैं। इसके लिए संघर्ष का रास्ता अपनाना पड़ता है। जीवन में मिली सफलताओं का आनंद तभी तक उठाया जा सकता है, जब तक मनुष्य में उसे बनाए रखने की दृढ़ इच्छा-शक्ति हो। जिसमें संघर्ष के प्रति दृढ़ इच्छा-शक्ति नहीं होती, वह सफलता की सुख-सुविधा से शीघ्र वंचित हो जाता है। जीवन में संघर्ष अपेक्षित होता है, अतः महापुरुषों के द्वारा किए गए संघर्ष से प्रेरणा लेते हुए संघर्ष को साथी बनाकर आगे बढ़ना चाहिए।